International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 16-11-2024, Accepted: 17-12-2024, Published: 01-01-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 52-53

मेवाड़ की जल प्रबंधता "भणाय की बावड़ी के विशेष संदर्भ मे"

डॉ. हरि लाल बलाई
सहायक आचार्य इतिहास, माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय भीलवाड़ा राज, राजस्थान, भारत

सारांश
भारतीय इतिहास में मेवाड़ के अदम्य साहस, अद्भुत शौर्य, अतुलनीय बलिदान, सहज समर्पण की अभिलाषा और सांस्कृतिक विरासत की सुदीर्घ परंपरा ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है। मेवाड़ महाराणाओं ने प्राचीन समय से ही वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए समुचित प्रबंध किए हैं क्योंकि मेवाड़ राज्य का अधिकांश भू–भाग पहाड़ी है जहां पर पेयजल व सिंचाई हेतु वर्षा जल का संचयन करना अति आवश्यक था अन्यथा अकाल की स्थिति में विकेट पेयजल का सामना करना पड़ता था। प्रकृति ने भी दो तरह से जल दिया है एक वर्षा जल एवं दूसरा भू.गर्भ से प्राप्त जल। जल बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। महाराणाओं ने जल को सहेजने के लिए विभिन्न झीले, बावडियां, तालाब, कुए आदि जलाशयों का निर्माण करवाया था। ये जलाशय स्थापत्य कला के अनुपम उत्कृष्ट नमूने है जो आज दिखाई देते हैं।
राणा मोकल ने अपने भाई बाघसिंह की स्मृति मे बाघेला सरोवर बनवाया तथा अपनी प्रिय रानी गोरांबिका की स्वर्ग प्राप्ति के निमित श्रृंगी ऋषि मे बावड़ी खुदवाई थी।[1] महाराणा राजसिंह की रानी रामरसदे ने देबारी के पास जया नाम की त्रिमुखी बावड़ी का निर्माण करवाया था राणी चारुमती ने भी राजनगर मे बावड़ी बनवाई थी।[2] मेवाड़ महाराणाओं ने वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए जयसमंद, राजसमंद, उदयसागर, पिछोला, फतहसागर आदि झीलों का निर्माण करवाया था। मेवाड़ में कई तरह की बावड़ियां हैं जिनमे एक मुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी, चौमुखी बावडियां मिलती है।
यह बावडियां जल संरक्षण का संदेश देती हैं इन्हीं बावड़ियों में मेवाड़ के मांडलगढ़ परागने में राजगढ़ के पास भणाय की बावड़ी अपनी विशालता कलात्मकता एवं जल संचयन की दृष्टि से मेवाड़ के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

मुख्य शब्दः बावड़ी, झील, मेहराब, स्तम्भ, परगना भणाय की बावड़ी

"बावड़ी" वह जलाशय है जिसके जलस्तर तक पहुँचने के लिए विभिन्न सीढ़ियों का निर्माण किया जाता था। सीढ़ियों के सहारे ही जल को आसानी से बाहर लाया जाता था। सम्पूर्ण देश में इन बावड़ियों को विभिन्न नामों से जाना जाता है। कन्नड़ भाषा में बावड़ी को 'कल्याणी' तथा मराठी में 'बारव' व गुजराती भाषा में "वाव" कहते है। संस्कृत साहित्य में बावड़ियों के लिए 'वापी' शब्द का प्रयोग हुआ है।[3]
भारत में जल स्त्रोत के रूप में बावड़ियों का निर्माण प्राचीनकाल से होता रहा है। जल सुविधा के लिए बावड़ी का निर्माण करवाना धार्मिक महत्त्व का कार्य माना जाता था। इसी धार्मिक मान्यता के आधार पर ही विभिन्न शासकों एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा देश में कई बावड़ियों का निर्माण करवाया गया है। समाज के अनेक प्रतिष्ठित एवं धनवान व्यक्तियों ने भी अपने इष्टदेव के नाम पर बावड़ियों का निर्माण करवाया था। बावड़ियाँ हमारी प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का आधार रही हैं।
मेवाड़ में भी पेयजल के लिए बावड़ियों का उपयोग किया जाता था। यहाँ के महाराणाओं ने हमेंशा से ही जल को संरक्षित करने का कार्य किया है। मेवाड़ की झीलें, तालाब, बाँध व बावड़ियाँ जल प्रबन्धन की दृष्टि से विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। मेवाड़ में विभिन्न प्रकार की बावड़ियों का निर्माण हुआ है। जिसमें एक मुखी, दो मुखी, त्रिमुखी एवं चौमुखी बावड़ियाँ प्रमुख हैं। ये बावड़ियाँ विश्वभर में जल संरक्षण का संदेश देती है। मेवाड़ के मांडलगढ़ पगरने में भी यहाँ के ठिकानेदारों एवं अन्य रसूकदार व्यक्तियों के द्वारा पेयजल के लिए तालाब, बावड़ियों एवं कुओं का निर्माण करवाया गया था। मांडलगढ़ क्षेत्र की नदियाँ बनास, बेड़च, मेंनाली एवं कोठारी वर्षा ऋतु में ही बहती हैं। इस कारण निवासियों को पेयजल के लिए इन्हीं बावड़ियों एवं कुओं पर निर्भर रहना पड़ता था। अजमेर के चौहानो, मेवाड़ के सीसोदिया राणाओ व मुगल शासकों ने मांडलगढ़ क्षेत्र में अनेक जलस्त्रोतों का निर्माण करवाया था।

मांडलगढ़ से बीस किलोमीटर दूर कटारियों का खेड़ा राजगढ़ के घने जंगलों में 'भणाय की बावड़ी' स्थित हैं। बावड़ी से दो किलोमीटर दूर ही बनास नदी बहती है। यह चारों ओर से अरावली पर्वतमाला से घिरी हुई है। पहाड़ी शिखर से देखने पर यह बावड़ी तलघर के रूप में बनी किसी बहु मंजिला हवेली जैसी दृष्टिगत होती है। स्थानीय निवासियों का मानना है कि पूर्व में यहाँ पर घनी बस्ती थी जो महामारी या बनास नदी में बाढ़ के कारण उजड़ गई थी।[4] यहाँ के निवासी पलायन करके रतनपुरा, राजगढ़, चौहली एवं घेवरियाँ जाकर बस गये थे। उस प्राचीन बस्ती के भवनों के पत्थरों एवं मिट्टी के ढेर के अवशेष खंडहर के रूप में दो किलोमीटर क्षेत्र में वर्तमान में भी दिखाई देते हैं। इन्हीं खंडहरों के बीच में बावड़ी निर्मित है। बावड़ी के पास में ही देवनारायण का मन्दिर है।[5] बावड़ी के पास वाली पहाड़ी पर एक मीटर चौड़ा परकोटा बना हुआ है। जिसके अन्दर खंडहरनुमा इमारतों के अवशेष हैं। जिससे स्वतरू आभास होता है कि पहाड़ी शिखर पर किला निर्मित था जो अब ध्वस्त हो गया है।
भणाय की बावड़ी के निर्माता के बारे में एक किंवदन्ती प्रचलित है कि 'एक पंडित मांडलगढ़ में धार्मिक अनुष्ठान कार्य करने आया था। वह राजगढ़ में आश्रम स्थापित करना चाहता था। जब वह आश्रम स्थापित नहीं कर पाया तो वापस अपने गाँव जाने लगा तभी तेज बारिश होने लगी थी और बनास नदी ने रास्ता रोक लिया। पंडित ने कटारियों का खेड़ा में ही विश्राम किया और इस बावड़ी का निर्माण करवाया। बावड़ी के प्रथम तल के मंडप पर खंडित शिलालेख खुदा है। जिस पर 1531ई. लिखा है।[6] धन के लालच में समाज कंटकों के द्वारा शिलालेख को खंडित कर दिया गया। बावड़ी के प्रथम तल की दीवार पर अरबी भाषा में एक पूरी सूरह लिखी हुई है इस सूरह में बताया गया कि

'परमेश्वर एक है वो एकमेंव है,
वह किसी से पैदा नहीं हुआ है,
न उससे कोई पैदा हुआ है'।

मेहराब शैली में निर्मित यह बावड़ी स्थापत्य एवं शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। ऊपरमाल में बहुतायत मात्रा में पाये जाने वाले लाल बलुआ पत्थरों से बावड़ी का निर्माण किया गया। बावड़ी की आकृति अंग्रेजी "T" अक्षर की है। बावड़ी में प्रवेश के लिए दो मार्ग है। इस कारण बावड़ी दो मुखी बावड़ियों की श्रेणी में आती है। यह भूमि स्तर से नीचे की ओर चार मंजिला है। प्रत्येक स्तर पर बलुआ पत्थरों पर नायाब कलाकारी देखने को मिलती है। मध्यकाल में जो राजपूत यहाँ पर किन्हीं लड़ाइयों में मारे गये हैं उनकी झुझार व पितर के रूप में बावड़ी के बाहरी तल पर मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई है। चारों तल में 114 कलात्मक स्तम्भ हैं। जो एक भूलभूलैया के रूप में हैं।[7] एक बार कोई व्यक्ति अन्दर प्रवेश कर जाता है तो बाहर निकलना बड़ा कठिन होता है। बावड़ी की विशालता व कलात्मकता को देखकर निर्माताओं के परिश्रम का अनुमान लगाया जा सकता है कि उन लोगों ने पानी के लिए कितना संघर्ष किया है।

बावड़ी की प्रथम मंजिल का निर्माण समतल भूमि के ऊपरी भाग पर किया गया है। बावड़ी के दोनों प्रवेश द्वार इसी तल पर निर्मित है। प्रवेश द्वार के समान्तर की दीवार पर पन्द्रह मेहराब बनाई गई है। सभी मेंहराब एक समान आकृति से बने है। प्रथम तल की बाहरी दीवार तीन फीट चौड़ी है। इस दीवार को लाल बलुआ पत्थरों के विशाल शिलाखंडों को चूने द्वारा जोड़कर निर्मित किया गया है। इस तल की लम्बाई में दोनों ओर कुल 34 मेहराब इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगाती है। दोनों प्रवेश द्वारों पर चार अलंकृत स्तम्भ युक्त छतरियाँ बनी हुई हैं। स्तम्भों का आधार वाला भाग चतुष्कोणीय है जिस पर घंटिकायें बनी हुई है। स्तम्भ के शीर्ष पर कीचक बनाये गये हैं। जो अपनी बहुभुजाओं में से दो भुजाओं से ऊपरी छत के भार को संभाले हुए है एवं नीचे के दो हाथों में अस्त्र–शस्त्र लिए हुए हैं। गले में कंठी माला एवं हाथों में आभूषण धारण कर रखे हैं। कीचक सिर पर मुकुट पहने हुए है। दोनों छतरियों का गुम्बद बिना अलंकरण के है। प्रवेश द्वार के पास ही भोमियाँ के चबूतरे निर्मित है। दोनों प्रवेश द्वारों से पन्द्रह सीढ़ियाँ उतरने के बाद द्वितीय तल में पहुँचा जाता है। दोनों तरफ की सीढ़ियाँ एक जगह गुम्बद के नीचे समतल पर मिलती हैं। यह गुम्बद 28 स्तम्भों पर टीका हुआ है। प्रत्येक स्तम्भ पर अलंकरण किया गया है।

द्वितीय मंजिल में गुम्बद के सामने दोनों ओर स्तम्भाकार बरामदे बने हैं। द्वितीय तल से बारह सीढ़ियाँ नीचे की ओर जाती हैं तब तीसरे तल पर पहुँचा जाता है। इस तल पर नौ–नौ के समूह में सीढ़ियों का निर्माण किया गया हैं। सीढ़ियों के सामने 14 स्तम्भों से एक विशाल खुला बरामदा बना है, तीसरी मंजिल से तीस सीढ़ियों से नीचे की ओर जाने पर बावड़ी के चतुर्थ स्तर पर पहुँचा जाता है। यहाँ पर मेहराबनुमा दरवाजा बना हैं।

इस बावड़ी से सीढ़ियों के अलावा कूप विधि द्वारा भी जल की निकासी की जाती थी। वर्तमान में बावड़ी विध्वंस होने के कगार पर है। यह बावड़ी मांडलगढ़ क्षेत्र की जल प्रबन्धता को दर्शाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गौरीशंकर हीराचंद ओझा– उदयपुर राज्य का इतिहास; भाग 1, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, प्रथमावृत्ति 1928ई. पृ.स. 275
2. कृष्ण जुगनू, शिलोत्कीर्ण राजप्रशस्ति महाकाव्यम, आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली प्रथम संस्करण 2018ई. पृ.स.28
3. कृष्ण जुगनू भारतीय जलस्रोत आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान दिल्ली प्रथम संस्करण 2022ई. पृ.स. 277
4. साक्षात्कार:– दयाराम गुर्जर, नि. कटारियों का खेड़ा, उम्र 58, दिनांक:13 सितम्बर 2021ई.
5. साक्षात्कार:– दादू गुर्जर, नि. देवतलाई, उम्र 76, देवरा के पुजारी, दिनांक: 01/02/2023ई.
6. नन्दलाल छीपा, मांडलगढ़ दर्शन, नामदेव पब्लिकेशन्स मांडलगढ़, प्रथम संस्करण 2003ई. पृ.स.75
7. दैनिक भास्कर, दिनांक 04/02/2021 पृ.स.6